ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

पंकज कुमार चौधरी & ज्योति किरण हिन्दी विभाग(2026). प्रेमचंद के कथा साहित्य में कृषक जीवन और नवजागरण के सूत्र. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(7),328-334.

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH & REVIEWS

journal homepage: www.ijmrr.online/index.php/home

प्रेमचंद के कथा साहित्य में कृषक जीवन और नवजागरण के सूत्र

(डॉ.) पंकज कुमार चौधरी[1] & प्रो. (डॉ.) ज्योति किरण हिन्दी विभाग[2]

[1]विभागाध्यक्ष (हिंदी), महर्षि विश्वामित्र (पी०जी०) महाविद्यालय, बक्सर, बिहार.
Email ID: pankajjhachoudhary@gmail.com
[2]महिला महाविद्यालय, किदवईनगर कानपुर.
Email ID: jyotikiran6437@gmail.com

How to Cite the Article: पंकज कुमार चौधरी & ज्योति किरण हिन्दी विभाग(2026). प्रेमचंद के कथा साहित्य में कृषक जीवन और नवजागरण के सूत्र. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(7),328-334.

https://doi.org/10.56815/ijmrr.v5i7.2026.328-334

Keywords

कृषक, समस्याएँ, शोषण, साहूकार, चेतना, नवजागरण, जमींदार, मजदूर

Abstract

किसान अन्नदाता हैं, किसान जीवन दाता हैं, यह जितना पहले सच था आज आधुनिक समय में भी उतना ही सच है। प्रेमचंद के समय में किसानों का जीवन अभावों, संघर्षों से भरा था। जीवन संघर्ष और तप का पर्याय था। सीमित संसाधन और असीम संघर्ष। साहूकारों और जमींदारों के शोषण से किसानों का जीवन त्रासदी का मार्मिक गाथा बन गया था। संघर्षों से लथ-पथ जिंदगी में भी सरलता, सहजता और सादगी से कृषक अपने जीवन के साथ-साथ सभी के जीवन में कुछ रस घोल देते थे। धरती के पुत्र धरती के समान धैर्य रखकर अन्न उगाते रहे, सभ्यता पलती रही, संस्कृति सँवरती रही। कृषक जीवन के सभी पहलुओं पर प्रेमचंद ने संवेदनशीलता से प्रकाश डाला है। जमींदार और साहूकारों से संघर्ष करते-करते किसान प्रकृति के कोप से भी धरती की कोख को बचाते रहे। इस संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य भी है कि प्रेमचंद की कहानियों में कृषक जीवन की समस्याएँ ही नहीं बल्कि शोषण के खिलाफ उभर रही, उबल रही चेतना ध्यान आकर्षित करती है। हर कहानी में यथास्थिति के खिलाफ कोई न कोई पात्र मुठभेड़ करता है। हर कहानी में क्रांति की एक आत्मीय सुगबुगाहट है। प्रेमचंद ने कृषक-जीवन से जुड़ी कहानियों में भारतीय किसान के जीवन संघर्ष, समस्याओं के साथ सामाजिक इकाई के रूप में उभर रही चेतना को भी रेखांकित

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

पंकज कुमार चौधरी & ज्योति किरण हिन्दी विभाग(2026). प्रेमचंद के कथा साहित्य में कृषक जीवन और नवजागरण के सूत्र. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(7),328-334.

	किया। प्रेमचंद की कहानियाँ केवल दुःख और दर्द की दास्ताँ नहीं है बल्कि कृषक जीवन के हक और हकीकत के लिए जाग रही चेतना की आवाज़ भी है। यह नवजागरण का मूल तत्व है।

शोध पद्धति :

इस शोध पत्र में विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। प्रेमचंद की कृषक जीवन से सम्बंधित प्रमुख कहानियों का अध्ययन कर उसमें नवजागरण के विभिन्न तत्वों की पहचान की गयी है।

उद्देश्य :

इस शोध पत्र का उद्देश्य हिंदी नवजागरण के स्वरूप को स्पष्ट करने के साथ ही प्रेमचंद की कहानियों में कृषक जीवन और नवजागरण के विविध संदर्भों को प्रस्तुत करना है। प्रेमचंद की कहानियों में सामाजिक जागरुकता और मानवता-वाद का संदेश मुखर है। सामाजिक बुराईयों एवं शोषण के खिलाफ जन मानस को तैयार करना प्रेमचंद की कहानियों का मुख्य उद्देश्य है। साहित्य समाज का दर्पण के साथ परिवर्तन का मधुर माध्यम भी है। प्रेमचंद की कहानियों में कृषक जीवन की समस्याओं के साथ-साथ शोषण और अपमान के खिलाफ उभर रही चेतना का विश्लेषण इस शोध पत्र का उद्देश्य है। चेतना ही परिवर्तन का कारक होता है।

प्रस्तावना :

किसानों के प्रति प्रेमचंद का लगाव अत्यंत गहरा है। यही कारण है कि कृषक जीवन के सभी पक्षों को प्रेमचंद ने अपने कथा-साहित्य में रेखांकित किया है। स्वतंत्रता से पहले भारत में जमींदारों का अधिक दबदबा था। जमींदार अंग्रेजों के कृपा भाजन थे और इस कृपा ने किसानों के प्रति जमींदारों को बेरहम बना दिया। मुंशी प्रेमचंद की कहानियों में कृषक जीवन की सच्ची और मार्मिक तस्वीर प्रस्तुत हुई है। किसान आजीवन कठिन मेहनत करते हैं लेकिन फल किसी और को मिलता है। मेहनत का फल मीठा होता है, जीवन का यह दर्शन यहाँ कलंकित हो जाता है। अखंड परिश्रम और खंडित फल। प्रेमचंद की स्पष्ट मान्यता थी कि सामाजिक सांस्कृतिक राष्ट्रीय उन्नति के लिए किसानों-मजदूरों का विकास अत्यंत आवश्यक है। यही कारण है कि प्रेमचंद ने न सिर्फ किसानों की समस्याओं को उठाया बल्कि समाज में एक सशक्त मानवीय इकाई के रूप में किसानों को स्थापित करने, सम्मान दिलाने साहित्य को जन चेतना का संवाहक माध्यम भी बनाया। हाशिए से मुख्य धारा में आने का संघर्ष वास्तव में त्रासदी का मार्मिक आख्यान है। किसानों के हित के लिए प्रेमचंद व्यावहारिक और वैचारिक स्तर पर सदैव सक्रिय रहे। अपने लेखन में प्रेमचन्द किसानों को किसी जाति और धर्म में न बाँधकर एक वर्ग के रूप में देखते हैं। प्रेमचंद की मान्यता थी कि "हमें तो उनाति के लिए ऐसे विधानों की जरूरत है, जो समाज में विप्लव किए बिना ही काम में लगाए जा सके।" (1) प्रेमचंद उन विरले लेखकों में हैं जो किसानों की समस्याओं को लेकर सम्वेदनशील ही नहीं बल्कि अत्यन्त सजग हैं। किसानों के प्रति सरकार की जिम्मेदारी क्या है, क्या होनी चाहिए, इसका मानवीय चिंतन प्रेमचंद के लेखन में मिलता है। उन्होंने 'किसानों का कर्जा' नामक निबंध में लिखा है, "यदि प्रान्तीय कौंसिल में

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

पंकज कुमार चौधरी & ज्योति किरण हिन्दी विभाग(2026). प्रेमचंद के कथा साहित्य में कृषक जीवन और नवजागरण के सूत्र. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(7),328-334.

सरकार किसानों के हित के लिए कोई कानून बनाना चाहती है तो जनता के प्रतिनिधियों को चाहिए कि वे सरकार का समर्थन करे।" (2) साहित्य में हमेशा नवजागरण के संकल्प और सूत्र विद्यमान रहते हैं। यूँ भी भारत में नवजागरण को लेकर अलग अलग अवधारणाएँ हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि "पहला नवजागरण गौतम बुद्ध के आविर्भाव के साथ आया। बुद्ध ने पुरानी जड़ अवधारणाओं को तोड़कर मनुष्य-मनुष्य के भीतर के भेद को मिटाया जिसका प्रभाव मध्य एशिया तक फैल गया। दूसरा नवजागरण भक्ति काल में दिखायी पड़ता है। तीसरा नवजागरण अंग्रेजी सभ्यता के सम्पर्क में आने के बाद, खासतौर पर 1857 के प्रथम स्वाधीनता आंदोलन के बाद शुरु हुआ जिसका केन्द्र बंगाल था। बाल समाज, आर्यसमाज, प्रार्थना समाज, थियोसोफिकल सोसाइटी जैसे विविध आंदोलन तथा विवेकानंद, रवीन्द्रनाथ टैगोर, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, महात्मा गाँधी, महर्षि अरविन्द विचारक इसके प्रमुख सूत्रधार थे। गुप्त युग को भी कुछ लोगों ने नवजागरण युग कहा है।" (3) साहित्य अपने युग की धड़कन को अपने में समाहित कर लेता है।

साहित्य और नवजागरण

सामाजिक सुधारवादी आंदोलनों से जागृति पैदा हुई। साहित्य सिर्फ समाज की समस्याओं को ही नहीं अपितु सामाजिक आदर्श को भी दिखाता है। डॉ. रामविलास शर्मा ने हिंदी नवजागरण को सैद्धांतिक आधार प्रदान किया। उन्होंने कहा है-"जो नवजागरण 1857 के स्वाधीनता संग्राम से आरंभ हुआ, वह भारतेन्दु युग में और भी व्यापक बना, उसकी साम्राज्य विरोधी, सामंत विरोधी प्रवृत्तियाँ द्विवेदी युग में और भी पुष्ट हुई। फिर निराला के साहित्य में कलात्मक स्तर पर तथा इनकी विचारधारा में ये प्रवृत्तियाँ क्रांतिकारी रूप में प्रकट हुई।" (4) कृषक समस्या के प्रति प्रेमचंद अत्यंत सम्वेदनशील थे। आरंभिक लेखन में प्रेमचंद जींदारी व्यवस्था में सुधार की उम्मीद रखते हैं कालांतर में जमींदारी प्रथा के उन्मूलन की बात करते हैं। डॉ. राम विलास शर्मा ने ठीक ही लिखा है- "हर कोई जानता है कि प्रेमचंद ने सभी वर्गों की अपेक्षा किसानों के चित्रण में सबसे अधिक सफलता पायी है। वे हर तरह के किसानों को पहचानते थे, उनके विभिन्न आर्थिक स्तर, उनकी विभिन्न विचारधाराएँ, उनकी विभिन्न सामाजिक समस्याएँ, वे किसान जीवन के हर कोने से परिचित थे। जैसी उनकी जानकारी असाधारण थी, वैसा ही किसानों से उनका स्नेह भी गहरा था। किसानों के सम्पर्क में आने वाली शोषण की जंगी मशीन के हर कल-पुर्जे से वे वाकिफ थे।" (5) हिंदी प्रदेश का नवजागरण 1857 से प्रेरणा प्राप्त करता है, इसलिए इसका फैलाव और स्वर राष्ट्रीय है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, राधाचरण गोस्वामी, प्रताप नारायण मिश्र, राधा मोहन गोकुल, सरदार पूर्ण सिंह, राधा कृष्ण दास, बालमुकुन्द गुप्त आदि। लेखकों ने न सिर्फ हिंदी के विकास में अपना योगदान दिया बल्कि नवजागरण की मुख्य धारा को शक्ति दी। सभी लेखकों ने प्रायः कोई न कोई संगठन बना रखे थे। भारतेन्दु ने बनारस में, प्रताप नारायण मिश्र ने कानपुर में, प्रेमधन ने मिर्जापुर में, राधा मोहत गोकुल ने पटना में संगठन बना रखे थे। इन संगठन के माध्यम से जनहित के कार्य होते थे।विधवाओं की स्थिति सुधारने के लिए काफी प्रयास किया गया। बॉकीपुर पटना के 'खडगविलास प्रेस' ने नवजागरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

पंकज कुमार चौधरी & ज्योति किरण हिन्दी विभाग(2026). प्रेमचंद के कथा साहित्य में कृषक जीवन और नवजागरण के सूत्र. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(7),328-334.

नवजागरण काल के आरंभिक प्रयासों में समाज, संस्कृति, धर्म दर्शन, जीवन-जगत और मानवीय मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा से सम्बंधित है। लोग पारंपरिक लीक से हटकर सोचने लगे। वीर भारत तलवार के अनुसार- "यह समझना भ्रामक होगा कि भारतीय नवजागरण सिर्फ पश्चिमी विचारों के सम्पर्क की सीधी-सरल देन था। वास्तव में यह दो विचार दृष्टियों की तकरार से पैदा हुई बैचैनी का नतीजा था। नयी शिक्षा में विकसित होने वाले हर युवा भारतीयों को नए पश्चिमी ज्ञान और अपनी परम्परा के जैसा तीखा द्वन्द्व महसूस होता था, वैसा पहले किसी भी दौर में नहीं हुआ। कई सुधारकों ने शिक्षा से अपने जीवन में मचने वाली खलबली और उसके क्रांतिकारी प्रभावों की चर्चा की है।" (6)

कृषक जीवन की कहानियाँ और नवजागरण :

प्रेमचंद को किसानों से गहरा लगाव था। किसानों की समस्याओं को किसानों के दिल में उतरकर महसूस कर लेते थे। आलोचक जितेन्द्र श्रीवास्तव लिखते हैं- "प्रेमचंद भारतीय साहित्य में संभवतः पहले लेखक थे, जिन्होंने जमींदारी प्रथा को समाप्त करने की बात कही और यह प्रश्न उठाया कि किसान और सरकार के बीच यह तीसरा वर्ग (जमींदारों का) क्यों है? इसकी क्या प्रासंगिकता है? उन्होंने जमींदारों को सुरक्षा देने के प्रश्न पर सरकार की आलोचना की।" (7) प्रेमचंद की कई कहानियाँ हैं जो कृषक जीवन की अंतहीन समस्याओं पर न सिर्फ प्रकाश डालती है बल्कि 'किसानों के पक्ष में जन मानस को तैयार भी करती है। पीढ़ी दर पीढ़ी किसानों का शोषण एक करुण गाथा है जो द्रवित करती है। 'बलिदान' कहानी का नायक 'गिरधारी' अपने पिता की मृत्यु के बाद जमींदार को नज़राना न दे पाने के कारण खेत से हाथ धो बैठता है। प्रेमचंद इस कहानी के माध्यम से बताते हैं कि किसानों का खेत से इतना प्रेम होता है कि मरने के बाद भी उनकी आत्मा खेत में बसती है। 'हरखु 'के गुजर जाने के बाद जब गिरधारी आर्थिक मकड़जाल में फँस जाता है तो वह ओंकारनाथ से 100 रुपये नजराने की रकम पर रियायत की उम्मीद से गिड़गड़ाता है-" नहीं सरकार, ऐसा न कहिए। हम बिना मारे मर जाएँगे। आप बड़े होकर कहते हैं तो मैं बैल- बधिया बेचकर पचास रु. कर सकता हूँ। इससे बेशी की हिम्मत नहीं पड़ती।" (8) यह फरियाद काम न आयी। कालिकादीन ने 100 रुपये नजराने देकर खेत ले लिए। गिरधारी ने जब सुना तो रोने के अलावा कुछ भी उसके वश में नहीं था। लेकिन उसकी पत्नी सुभागी कालिकादीन के घर गयी और उसकी स्त्री को ललकारते हुए कहा- "कल का बानी आज का सेठ, खेत जोतने चले हैं। देखें, कौन मेरे खेत में हल ले जाता है? अपना और उसका लोहू कर दूँ" (9) एक किसान से मजदूर बनने की त्रासदी प्रेमचंद की कहानियों का सबसे करुण पक्ष है। गिरधारी का समर्पण और सुभागी की ललकार कहानी के दो छोर हैं। प्रेमचंद के स्त्री पात्र अधिक मुखर और मजबूत है। 'विध्वंस' कहानी में बेगारी प्रथा का मार्मिक चित्रण है। कहानी की नायिका 'भुनगी' बेगार में जमींदार उदयभानु पांडे का चना नहीं भून पाती है तो जमींदार को यह अपमानित लगता है और उसका भाड़ खुदवाकर फिंकवा देता है। वह फिर भाड़ बनाती है तो जमींदार उसके नाद पर लात चलाता है जो उसकी कमर पर लगती है तो भुनगी तनकर खड़ी हो जाती है। जींदार जब उसे गाँव छोड़ने को कहता है तो वह कहती है- "क्यों छोड़कर निकल जाऊँ? बारह साल खेत जोतने से आसामी भी काश्तकार हो जाता है। मैं तो इस झोपड़ी में बूढ़ी हो गयी। मेरे सास ससुर और उनके बाप दादा इसी झोपड़े में रहे। अब इसे यमराज को

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

पंकज कुमार चौधरी & ज्योति किरण हिन्दी विभाग(2026). प्रेमचंद के कथा साहित्य में कृषक जीवन और नवजागरण के सूत्र. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(7),328-334.

छोड़कर कोई मुझसे नहीं ले सकता" (10) मुनगी की यह चेतना भड़क जाती है। जमींदार द्वारा झोपड़ी में आग लगाए जाने पर उसी से कूदकर जान दे देती है। यह आग विकराल रूप धारण करती है और जमींदार का घर परिवार भी जल कर भस्म हो जाता है। कहानी में प्रेमचंद लिखते है- "ज्वालाएँ और भड़की और पंडित जी के विशाल को दबोच बैठीं। देखते ही देखते वह भवन उस नौका की भाँति, जो तरंगों के बीच में हिचकोरे खा रही हो, अग्नि संसार में विलीन हो गया और वह क्रंदन-ध्वनि, जो उसके भस्मावशेष में प्रस्फुटित होने लगी, भुनगी के शोकमय विलाप से भी अधिक करुणाकारी थी।" (11) इस कहानी से प्रेमचंद यह संदेश देना चाहते हैं कि जो आग गरीबों को जलाती है वहीं, आग लगाने वालों को भी नष्ट कर देती है। भुनगी भले ही खत्म हो गयी लेकिन उसकी चेतना वातावरण में सवाल बनकर घूमने लगी। शोषण को समझना और उसका प्रतिकार ही जागरण है भले ही जान चली जाए। कर्ज में डूबे भारतीय किसानों के विषय में अपने एक लेख में प्रेमचंद लिखते हैं- "भारतीय किसानों की इस समय जैसी दयनीय दशा है, उसे कोई शब्दों में अंकित नहीं कर सकता। उनकी दुर्दशा को वे स्वयं जानते हैं या उनका भगवान जानता है। जमींदार को समय पर मालगुजारी चाहिए, सरकार को समय पर लगान चाहिए, उधर किसान को खाने के लिए दो मुट्ठी अन्न चाहिए, पहनने के लिए एक चिथड़ा चाहिए। चाहिए सब कुछ, पर एक ओर तुषार तथा अतिवृष्टि फसल को चौपट कर रही है, दूसरी ओर आँधी उनके रहे-सहे खेत को भी नष्ट कर रही है। रोग, प्लेग, हैजा, शीतला उनके नौजवानों को हरी-भरी तथा लहलहाती जवानी में उसी दुनिया से उठाए लिए चली जा रही है, जिस तरह लहलहाता खेत अभी छह दिन पूर्व के पत्थर-पाले से जल गया। गल्ला पैदा हो रहा है, पर भाव इतना मन्दा है कि कोई दो वक्त भोजन भी नहीं कर सकता। स्त्री के तन पर जो दो-चार गहने थे, वो साहूकार के पेट से बचकर सरकार की मालगुजारी के पेट में चले गए।" (12)

कृषक जीवन का संघर्ष वास्तव में जीवन के रस को सोख लेता है इसके बावजूद किसान को किसान होने का आत्मगौरव होता है लेकिन यह गौरव भी तब चकनाचूर हो जाता हैं जब वह किसान से मजूर बन जाता है। यह नासूर ताउम्र रिसता रहता है। 'प्रेमाश्रम उपन्यास में प्रेमचंद ने किसान जीवन के संघर्षों का व्यापक चित्रण किया है। राजनीतिक स्तर पर भी किसानों की समस्या को लेकर जहाँ-तहाँ आंदोलन हो रहे थे। चम्पारण में किसानों का संघर्ष किसानों के हक का उद्घोष था। 'प्रेमाश्रम' उपन्यास में किसानों का सिर्फ शोषण हीं नहीं हैं वह बल्कि शोषण के विरुद्ध संघर्ष की चेतना भी प्रस्फुटित हुई है। उपन्यास में गर्मी के मौसम में कारिन्दा गौस खाँ तालाव का पानी रोक लेता है, गाँव वाले इसका समान विरोध करते हैं। बात बढ़ती है तो कभी जमींदार का आदमी रह चुके सुक्खू चौधरी कादिर का हाथ पकड़कर रोक लेता है- "कहाँ जाते हो कादिर भैया? जब तक यहाँ कोई निपटारा न हो जाए, तुम जानें न पाओगे। जब हर मामले में इसी तरह दबना है तो गाँव के सरगना काहे को बनते हो? कादिर खां-तो क्या कहते हो लाठी चलाऊँ? सुक्खू और लाठी है किस दिन के लिए? कादिर-किसके बूते पर लाठी चलेगी? गाँव में रह कौन गया है? अल्लाह ने पट्ठों को चुन लिया। सुक्खू-पठे नहीं हैं न सही, बूढ़े तो हैं? हम लोगों की जिंदगानी किस रोज काम आएगी?" (13) इस प्रकार परिस्थितियाँ कठोर हृदय में भी नमी पैदा कर देती है।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

पंकज कुमार चौधरी & ज्योति किरण हिन्दी विभाग(2026). प्रेमचंद के कथा साहित्य में कृषक जीवन और नवजागरण के सूत्र. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(7),328-334.

सुक्खू इसका उदाहरण है। प्रेमाश्रम में बलराज कहता है- "जींदार कोई बादशाह नहीं कि चाहे कितनी जबरदस्ती करे और हम मुँह न खोलें। इस जमाने में बादशाहों का भी इतना अख्तियार नहीं, जमींदार किस गिनती में हैं।" (14) बलराज उस युवा पीढ़ी का प्रतीक है जो शोषण और अन्याय के विरुद्ध खड़ी है। बलराज बोल्शेविक क्रांति से भी प्रभावित है और मानता है- "रूस में काश्तकारों का ही राज है, वह जो चाहते हैं, करते हैं। वहाँ अभी हाल की ही बात है, काश्तकारों ने राजा को गद्दी से उतार दिया है और अब किसानों और मजदूरों की पंचायत राज करती है।" (15) किसानों की बदल रही चेतना नवजागरण का संदेश देती है। 'कर्मभूमि" उपन्यास पर बारदोली किसान आंदोलन का प्रभाव है। संयुक्त प्रांत के किसानों के लगान-बंदी आंदोलन प्रेमचंद ने करीब से महसूस किया था। प्रेमचंद किसानों के हक के लिए हो रहे आंदोलनों से प्रभावित भी हुए और अपने कथा-साहित्य से उन्होंने आंदोलन को प्रभावित भी किया। प्रेमचंद की लेखनी जिस तरह शोषित-पीड़ितों के पक्ष में है, यह जनपक्षधरता की स्थापना साहित्य में क्रमशः हो रही थी। यह पूर्ववर्ती परम्परा का ही हिस्सा था। भारतेन्दु, राधाचरण गोस्वामी, प्रताप नारायण मिश्र, राधा मोहन गोकुल, बालमुकुन्द गुप्त आदि अनेक लेखकों ने नवजागरण को बल दिया।

निष्कर्ष

वास्तव में प्रेमचंद के कथा साहित्य में भारतीय नवजागरण की चेतना स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। उनका कथा साहित्य सिर्फ मनोरंजन नहीं करता बल्कि विभिन्न सामाजिक और कृषक जीवन की समस्याओं को उठाकर प्रेमचंद सामाजिक परिवर्तन हेतु लोगों को प्रेरित करते हैं। किसान, मजदूर, स्त्री, और समाज के निम्नवर्गीय पात्रों के माध्यम से उन्होंने उपेछित वर्गों को न सिर्फ स्वर दिया बल्कि एक मानवीय इकाई के रूप में समाज के मुख्य धारा में लाने का प्रयास भी किया। उन्होंने भारतीय समाज की जड़ता, अंधविश्वास, जातिगत भेदभाव नारी उत्पीड़न और आर्थिक विषमता जैसे विषयों को सहृदयता के साथ कथा साहित्य में प्रस्तुत किया और नवजागरण के मूल्यों और आदर्शों को गौरव के साथ स्थापित किया। प्रेमचंद का कथा साहिय इस बात को प्रमाणित करता है कि नवजागरण केवल बौद्धिक या शहरी आंदोलन नहीं था, बल्कि इसका प्रभाव सुदूर ग्रामीण जीवन तक था। प्रेमचंद की रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना भी नवजागरण का महत्वपूर्ण अंग है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्रेमचंद के कथा साहित्य मे हिन्दी नवजागरण का महत्वपूर्ण सूत्र विद्यमान है जो आज भी जागृति का पैगाम देता है।

AUTHOR(S) CONTRIBUTION

The writers affirm that they have no connections to, or engagement with, any group or body that provides financial or non-financial assistance for the topics or resources covered in this manuscript.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

पंकज कुमार चौधरी & ज्योति किरण हिन्दी विभाग(2026). प्रेमचंद के कथा साहित्य में कृषक जीवन और नवजागरण के सूत्र. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(7),328-334.

CONFLICTS OF INTEREST

The authors declared no potential conflicts of interest with respect to the research, authorship, and/or publication of this article.

PLAGIARISM POLICY

All authors declare that any kind of violation of plagiarism, copyright and ethical matters will take care by all authors. Journal and editors are not liable for aforesaid matters.

SOURCES OF FUNDING

The authors received no financial aid to support for the research.

REFERENCES

1. प्रेमचंद, विविध प्रसंग, भाग-2, लोकभारती, इलाहाबाद 1962, पृ०487,

2. वही, पृ०494

3. अमरनाथ, हिंदी भाषा की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012, पृ०216

4. शर्मा, डॉ. राम विलास शर्मा, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012, पृ०19 (भूमिका से)

5. शर्मा, डॉ० राम विलास शर्मा, प्रेमचंद और उनका युग राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1952, पृ०177

6. तलवार, वीर भारत, रस्साकशी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1985, पृ०121

7. श्रीवास्तव जितेन्द्र प्रेमचंद (सं०) प्रेमचंद किसान जीवन सम्बंधी कहानियाँ, भारतीय ज्ञान पीठ प्रकाशन, 2013 पृ०15 (भूमिका से)

8. वही, बलिदान, पृ०29

9. वही, पृ०31

10. प्रेमचंद, मानसरोवर, सरस्वती प्रेस इलाहाबाद, भाग-8, पृ०182

11. वही 183

12. प्रेमचंद, विविध प्रसंग, भाग-2, लोकभारती इलाहाबाद, 1962, पृ०490

13. प्रेमचंद, प्रेमाश्रम, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद, 1922, पृ०181

14. वही, पृ०52

15. वही, पृ०53

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License